GANDHIAN IDEOLOGY-3

FOR: P.G.SEM-3,CC-14,UNIT-2

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

Edit with WPS Office

राज्य संबंधी विचार

- गांधीजी राज्य के विरुद्ध थे। वे राज्य विहीन समाज चाहते थे। उनका मानना था कि राज्य का जन्म ही हिंसा में होता है। हिंसा शोषण है और प्रत्येक राज्य निर्धनों का शोषण करता है ।कोई भी कार्य स्वेच्छापूर्वक किया जा सकता है वहीं नैतिक हो सकता है लेकिन राज्य आज्ञा देता है इसलिए इसका कोई भी कार्य नैतिक नहीं हो सकता। राज्य के अधिकार का आधार हिंसा है। यह सामूहिक और संगठित रूप से हिंसा का प्रतिनिधित्व करता है।

Edit with WPS Office

राज्य संबंधी विचार

- गांधी जी का आदर्श समाज राज्य विहीन होगा। उसमें विभिन्न वर्गों का अस्तित्व नहीं रहेगा। उसमें आत्मनिर्भर ग्राम होंगे जो स्वेच्छापूर्ण सहयोग के आधार पर शांतिपूर्ण और गौरव पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। प्रत्येक ग्राम का एक गणराज्य या पंचायत होगी। ग्राम पंचायत के पास अपने समस्त भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति एवं रक्षा के लिए साधन विद्यमान होगा। गांधीजी का आदर्श समाज काआकार वृत्ताकार होगा जिससे केंद्र में व्यक्ति होगा। व्यक्ति गांव के लिए और गांव बड़ी इकाई के लिए बलिदान करने को तैयार होगा। समाज का आधारभूत आंदर्श **वसुदेव कुटुंबकम** और **व्यक्तिगत समता** होगा।

Edit with WPS Office

राज्य संबंधी विचार

- ग्रामीण गणराज्य स्वायत्तशासी इकाई के रूप में एक शिथिल संघ का निर्माण करेंगे। संघ शक्ति का आधार नैतिकता होगा न कि हिंसात्मक शक्ति ।इसमें पुलिस, जेल ,न्यायालय, भारी उद्योग, बड़े नगर और संवाद वाहन के लिए कोई स्थान न होगा।इस प्रकार गांधी जी का नवीन समाज बहुत सरल होगा इसकी सभ्यता ग्रामीण होगी।

Edit with WPS Office

राज्य संबंधी विचार

- गांधीजी के आदर्श राज्य की प्रमुख विशेषता शासन शक्ति का विकेंद्रीकरण है ।शासन शक्ति किसी एक इकाई में केंद्रित नहीं रहेगी बल्कि शासन की सभी इकाइयों में न्याय उचित बटवारा होगा ।देश के लिए वे एक केंद्रीय सरकार के नियंत्रण में राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने की आवश्यकता महसूस करते थे तथापि वे ग्राम पंचायतों को अधिकाधिक अधिकार सौंपने के पक्ष में थे।

Edit with WPS Office

राज्य संबंधी विचार

- गांधीजी राज्य को एक साधन के रूप में देखते थे साध्य नहीं। राज्य का उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है। उनका मानना था कि संप्रभुता वास्तव में सर्वसाधारण में निहित होती है।उनका कहना था कि यदि हमारे समाज के कुछ इने-गिने लोगों के हाथ में सत्ता आ जाएगी तो इससे हमें वास्तविक स्वराज नहीं मिलेगा। वे व्यक्ति को राज्य के विरुद्ध अधिकार देते थे।

Edit with WPS Office

न्यास धारिता सिद्धांत

गांधीजी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत औद्योगिक पूंजीवादी शोषण के विरोध में था। गांधीजी को मनुष्य के दिव्यता में विश्वास था। उनका मानना था प्रत्येक वस्तु ईश्वर की है और ईश्वर से प्राप्त होती है अतः यह उसके सभी लोगों के लिए है ना कि किसी व्यक्ति विशेष के लिए। इस सिद्धांत के अनुसार संपत्ति का वास्तविक स्वामी समाज है कोई व्यक्ति विशेष नहीं क्योंकि सामाजिक व्यवस्था बने रहने से तथा संपूर्ण समाज के क्रियाकलापों से ही संपत्ति उत्पन्न होती है एवं उसमें वृद्धि होती है।

Edit with WPS Office

न्यास धारिता सिद्धांत

अतः भूमि पति और पूंजीपति क्रमशः भूमि और पूंजी के वास्तविक स्वामी नहीं है ।उन्हें स्वयं को संपत्ति का स्वामी न समझ कर उसका केवल न्यास धारी समझना चाहिए। संपत्ति से उत्पन्न होने वाले धन का उतना ही भाग उन्हें ग्रहण करना चाहिए जितना उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त हो। शेष सभी धन उन्हें परिश्रम करने वाले किसानों, मजदूरों एवं कामगारों के लिए उपलब्ध करा देना चाहिए।

Edit with WPS Office

न्यास धारिता का सिद्धांत

यदि संपत्ति स्वामी आवश्यकता से अधिक धन अपने लिए रखते हैं तो ठीक वैसा ही अपराध करते हैं जैसा कि न्यास धारी न्यास की संपत्ति हड़पने पर करता है।

- गांधी जी द्वारा प्रतिपादित न्यास धारिता का यह सिद्धांत कार्ल मार्क्स के वर्ग संघर्ष के सिद्धांत से बिल्कुल विपरीत है। गांधीजी के अनुसार समाज को शोषक और शोषित नामक दो वर्गों में विभाजित करना गलत है क्योंकि संपूर्ण समाज के हित एक से ही होते हैं।

Edit with WPS Office

न्यास धारिता का सिद्धांत

अतः समस्त समाज के हितों की सिद्धि के लिए उसके सभी वर्गों में सहयोग होना आवश्यक है।इस वर्गीय सहयोग का आधार न्यास धारिता का सिद्धांत ही हो सकता है। इस प्रकार गांधी जी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत ऊंच-नीच का समतलीकरण, आर्थिक समानता की कुंजी है। संक्षेप में गांधीजी के न्यास धारिता के सिद्धांत निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

1. न्यास धारिता का सिद्धांत समानता के विचारधारा पर आधारित है

Edit with WPS Office

न्यास धारिता का सिद्धांत

- 2. न्यासधारिता का सिद्धांत समाज के वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था को समतावादी व्यवस्था में रूपांतरित करने का एक साधन है। इसका ध्येय सुधारवादी समाज की स्थापना करना है।
- 3. यह संपत्ति पर निजी स्वामित्व की समाप्ति कर सामाजिक स्वामित्व की स्थापना करना चाहता है।
- 4. संपत्ति का प्रयोग सामाजिक हित में हो इसलिए इस सिद्धांत में राज्य का हस्तक्षेप अनिवार्य माना गया।

Edit with WPS Office

न्यास धारिता का सिद्धांत

- 6. यह सिद्धांत इस बात का निर्धारण करता है कि सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप ही आर्थिक उत्पादन होना चाहिए, व्यक्तिगत इच्छाओं के आधार पर नहीं।
- गांधी जी का न्यास धारिता का यह सिद्धांत आधुनिक भारत में आज ज्यादा प्रासंगिक है जहां संपत्ति का संकेन्द्रण सीमित हाथों में हो रहा है तथा गरीब और अमीर के बीच की खाई बढ़ती जा रही है।करोड़ों लोग जीवन की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में अक्षम है।

Edit with WPS Office

औद्योगिकरण के प्रति विचार

- गांधीजी ने आधुनिक औद्योगीकरण की आलोचना की। उनके अनुसार यह मशीनीकरण भारत को पीछे धकेल रहा है वास्तव में गांधी जी भारत में लघु और कुटीर उद्योग के संदर्भ में ऐसा कह रहे थे क्योंकि भारत की 80% से ज्यादा आबादी गांव में रहती थी और अंग्रेजों के व्यापारिक नीति से हस्तशिल्प उद्योग का पतन हो गया था

Edit with WPS Office

सामाजिक सिद्धांत

- गांधी जी ने आदर्श समाज की स्थापना पर बल दिया जिसमें अप्राकृतिक ऊंच-नीच का भाव, अस्पृश्यता, छुआछूत ,स्त्री-पुरुष भेदभाव न हो। इनके अनुसार जब तक अस्पृश्यता का समूल नष्ट नहीं कर दिया जाता तब तक भारतीय समाज उन्नति नहीं कर सकेगा।
- गांधी जी ने स्त्री पुरुष समानता पर बल दिया और कहा कि देश की आधी जनसंख्या निष्क्रिय तथा निष्प्राण कर देने से देश का विनाश हो जाएगा।

Edit with WPS Office

सामाजिक सिद्धांत

- गांधी जी भारत जैसे देश में आर्थिक तथा धार्मिक दोनों की दृष्टि से गाय की रक्षा को बहुत अधिक आवश्यक मानते थे इसलिए उन्होंने गो वध निषेध का समर्थन किया।
- मध निषेध : गांधीजी का मानना था कि मध तथा अन्य मादक पदार्थों का सेवन व्यक्ति का चारित्रिक पतन करता है अतः आदर्श राज्य में मादक वस्तुओं के उत्पादन तथा बिक्री नहीं होनी चाहिए ।

Edit with WPS Office

वर्ण व्यवस्था

- गांधीजी का आदर्श समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित होगा। प्रत्येक वर्ण वंश परंपरा के अनुसार अपना कार्य करेगा किंतु इन विविध वर्णो या वर्गों के व्यक्तियों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त होगें और किसी प्रकार की उच्च नीच की भावना नहीं होगी ।स्त्रियों को भी सभी क्षेत्रों में समान अधिकार प्राप्त होंगे। उनका कार्यक्षेत्र घर ही होगा।

Edit with WPS Office

सांप्रदायिकता का अंत

- राज्य को किसी विशेष धर्म को प्रश्रय नहीं देना चाहिए।राज्य की दृष्टि में सभी धर्म समान होंगे और सभी धर्मावलंबियों को समान सुविधाएँ मिलनी चाहिए।

Edit with WPS Office

शिक्षा संबंधी विचार

- गांधीजी शिक्षा को बड़े ही व्यापक अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। वे केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे ।उनके अनुसार साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है न प्रारंभ। यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है।
- गांधीजी के अनुसार शिक्षा से मेरा तात्पर्य एक ऐसी प्रणाली से है जो बालक एवं मनुष्य के समस्त प्रतिभाओं जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक सम्मिलित है ,का विकास करें।

Edit with WPS Office

शिक्षा का उद्देश्य

- गांधीजी के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो छात्रों को शारीरिक मानसिक एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बना सके
- शिक्षा द्वारा छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया जाना चाहिए इसके लिए बालकों को जो शिक्षा दी जाए वह बालक के भौतिक एवं सामाजिक वातावरण के अनुरूप होनी चाहिए
- शिक्षा छात्रों का चारित्रिक विकास करें। इसके लिए वह बालकों में ऐसी भावना का विकास करे जिससे बालक अच्छे- बुरे, नैतिक-अनैतिक

Edit with WPS Office

शिक्षा का उद्देश्य

तथ्यों के मध्य अंतर कर सकें।

- शिक्षा द्वारा छात्रों में अनुशासन की भावना का विकास किया जाये।
- गांधीजी नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा की वकालत की।
- इन्होंने 1937 में वर्धा में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन जिसे **वर्धा शिक्षा योजना** कहा जाता है में **नई तालीम** नाम से एक नया शिक्षा दर्शन दिया।

Edit with WPS Office

नई तालीम की विशेषताएं

- 7 से 14 वर्ष के बालकों को अनिवार्य तथा नि:शुल्क शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो
- बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा हस्तशिल्प अथवा उत्पादक कार्य से जुड़ी हुई होनी चाहिए। अन्य सभी गुणों एवं योग्यताओं का विकास जहां तक संभव हो बच्चों के पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए उनके द्वारा चुने गए हस्त कला से संबंधित होना चाहिए।

Edit with WPS Office

रचनात्मक कार्य

- गांधीजी ने 'सर्व समावेश'की नीति के तहत विभिन्न समुदाय को एकजुट किया ।हिंदू -मुस्लिम एकता पर बल दिया ।हरिजनों उद्धार कार्यक्रम पर जोर दिया।
- इन्होंने कटाई बुनाई खादी तथा चरखा जैसे स्वावलंबी कार्यों पर बल दिया।
- इन रचनात्मक कार्यक्रमों से गरीब जनता को राहत मिली । इससे गांधीजी की स्वीकृति बढ़ी।

Edit with WPS Office